



11075CH03

तृतीयः पाठः

सूक्तिसुधा

प्रस्तुत पाठ चाणक्य द्वारा रचित चाणक्यनीति तथा नारायण पण्डित प्रणीत हितोपदेश से संकलित किया गया है। महर्षि चाणक्य द्वारा कहे गए मुक्तक पद्य जीवन को मूल्यवान बनाने के लिए परम उपयोगी हैं। पद्य संख्या एक से तीन में – किस स्थान पर निवास करना चाहिए, कौन मनुष्य का सच्चा मित्र है तथा गुणों की उपयोगिता का वर्णन है। पद्य संख्या चार से आठ हितकारी उपदेशों को सूचित करते हैं यथा मूर्ख व्यक्ति का प्रवीण होना, मनस्वी व्यक्ति का व्यवहार, पुरुष के छह दोषों का वर्णन तथा सांसारिक जीवनसुखों के वर्णन। जीवन को मधुर तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए कतिपय मूल्यों की आवश्यकता होती है और ये नीतिपरक पद्य तथा हितकारी उपदेश जीवन को सुसंस्कृत एवं सार्थक बनाने में उपयोगी तथा सहायक सिद्ध होंगे।

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।

न च विद्यागमः कश्चिद् वासं तत्र न कारयेत्॥1॥

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥2॥

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।

को विदेशः सविद्यानां कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्॥3॥

काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम्।

तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्॥4॥

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।

सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद् विशीर्येत वनेऽथवा॥5॥

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
सन्निमित्तं वरं त्यागो विनाशे नियते सति॥6॥

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥7॥

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥8॥

शब्दार्थः टिप्पण्यश्च

| | |
|---------------|--|
| विद्यागमः | - विद्यायाः आगमः, षष्ठी तत्पुरुष समास, विद्या की प्राप्ति। |
| वृत्तिः | - वृत् + क्तिन्, आजीविका। |
| शत्रुसंकटे | - शत्रोः संकटं तस्मिन्, षष्ठी तत्पुरुष, शत्रु का संकट होने पर। |
| व्यवसायिनाम् | - व्यवसाय + णिनि, ष० ब० व, उद्यमशीलों के लिए। |
| धत्ते | - धारण करता है। |
| सत्सन्निधानेन | - सतां सन्निधानम्, तेन, षष्ठी तत्पुरुष, सज्जनों की संगति से। |
| कुसुमस्तबकः | - कुसुमानां स्तबकः, षष्ठी तत्पुरुष, फूलों का गुच्छ। |
| विशीर्येत | - वि + शृ + कर्मवाच्य वि० लिङ्० प्र० पु० ए० व०, नष्ट होवे। |
| उत्सृजेत् | - त्याग दे। |
| सन्निमित्तं | - श्रेष्ठ लक्ष्य के लिए। |
| दीर्घसूत्रता | - दीर्घसूत्र + तल्, स्त्री० प्र० ए० व०, कार्य के विषय में अधिक समय तक सोचते रहना, समय पर कार्य न करना। |
| अर्थागमः | - अर्थस्य आगमः, षष्ठी तत्पुरुष, धन की प्राप्ति। |
| अर्थकरी | - धन उत्पन्न करने वाली। |
| प्रियवादिनी | - प्रिय बोलने वाली। |
| अरोगिता | - किसी प्रकार के रोग का न होना (नीरोग होना)। |

अभ्यासः

1. संस्कृतेन उत्तरं देयम्

- (क) अयं पाठः काभ्यां ग्रन्थाभ्यां संकलितः?
(ख) कुत्र वासः न कर्तव्यः?

- (ग) बान्धवः कुत्र कुत्र तिष्ठति?
 (घ) काचः कस्य संसर्गात् मारकतीम् द्युतिं धत्ते।
 (ङ) प्राज्ञः परार्थे किं किं उत्सृजेत्?
 (च) मूर्खः कथम् प्रवीणताम् याति?
 (छ) पुरुषेण के षड् दोषाः हातव्याः?
 (ज) जीवलोकस्य षट् सुखानि कानि सन्ति?

2. रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्

- (क) यः तिष्ठति सः बान्धवः।
 (ख) जीवलोकस्य षट् सुखानि भवन्ति।
 (ग) मनस्विनः इव द्वयी वृत्तिः भवति।
 (घ) षड्दोषाः हातव्याः।
 (ङ) सन्निमित्तं वरं त्यागो सति।

3. अधोलिखितयोः पद्यांशयोः मातृभाषया भावार्थम् लिखत

- (क) कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्।
 (ख) सन्निमित्तं वरं त्यागो विनाशे नियते सति।
 (ग) सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद् विशीर्येत वनेऽथवा।

4. क-भागस्थपदैः सह ख-भागस्यार्थानां मेलनं क्रियताम्

| क | ख |
|---------------|-----------------|
| विद्यागमः | विदुषाम् |
| व्यसने | शोभाम् |
| सविद्यानाम् | विद्याप्राप्तिः |
| द्युतिम् | पुष्पगुच्छस्य |
| कुसुमस्तबकस्य | विपत्तौ |
| मूर्ध्नि | कल्याणम् |
| भूतिम् | शिरसि |

5. उदाहरणानुसारं विग्रहपदानि आधृत्य समस्तपदानि रचयत

| विग्रहपदानि | | समस्तपदानि |
|---------------------|---|------------|
| यथा- विद्यायाः आगमः | = | विद्यागमः |
| राज्ञः द्वारे | = | |
| सतां सन्निधानेन | = | |

| | | |
|---------------------|---|-------|
| काञ्चनस्य संसर्गात् | = | |
| अर्थस्य आगमः | = | |
| जीविताय इदम् | = | |
| न रोगिता | = | |
| अर्थम् करोति या सा | = | |

6. अधोलिखितेषु शब्देषु प्रकृतिप्रत्यययोः विच्छेदं कुरुत
प्राप्ते, प्रवीणताम्, वृत्तिः, नियते, हातव्या।



समानान्तरश्लोकाः

- (1) पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान्प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥
(नीतिशतकम्-73)
- (2) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥
(नीतिशतकम्-79)
- (3) महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम्॥
(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्-90/2)
- (4) संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे।
सुभाषितं च सुस्वादु संगतिः सुजने जने॥
(चाणक्यनीतिदर्पणः)
- (5) संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न श्रूयते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तज्जायते मौक्तिकम्
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते॥
(भर्तृहरिनीतिशतकम्)

- (6) सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥
(मनुस्मृतिः 4/138)
- (7) क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनम्।
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्॥
- (8) आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।
(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्)
- (9) रविश्चन्द्रो घनाः वृक्षाः नद्यो गावश्च सज्जनाः।
एते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिताः॥
- (10) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥
(नीतिशतकम्)